Acharya Dinesh Chandra Joshi

Born on April 11, 1926, in the Himalayan village of Matela, Nainital, Uttarakhand, Acharya Dinesh Chandra Joshi was a legendary Sanskrit scholar and illumined spiritual master. Raised in a Brahmin family, he was the son of the eminent Vedic scholar Acharya Premballabh Joshi and Smt. Revati Joshi. His early education was a "living university" conducted within the sanctified atmosphere of his home under the guidance of his father and grandfather. Through lifelong tapasya, he mastered the Shukla Yajurveda and Advaita Vedanta, studying at India's foremost centers of learning, the sacred Sapta Puris.

Acharya Ji viewed Sanskrit not as a relic, but as a luminous bridge connecting India's civilizational consciousness (chiti) with ethical statecraft (niti). For decades, he traveled barefoot across India and Nepal, disseminating the liberating vision of Adi Shankaracharya. His expansive ministry naturally embraced environmental protection, the sanctity of mountain landscapes, and the dignity of the Sanskrit language. His tireless advocacy reached a historic milestone in 2010 when Sanskrit was declared the second official language of Uttarakhand.

In the 1990s, he established the Bhagavati Temple and Meditation Centre in Matela, which remains a vibrant pilgrimage site for seekers today. On Sanskrit Day in 2010, inspired by Rigvedic injunctions, he founded SWASTIVACHANAM. This initiative championed his fivefold vision—Sanskrit Journalism, Ayurveda, Yoga, Vastu Shastra, and Indology—which he described as the Pancha Mahaprasthanas, or five sacred pilgrimages guiding society toward wholeness and awakening.

Known affectionately as "Acharya Ji" or "Pandit Ji," he was a living bridge between vidya (knowledge) and seva (service). His daily life was a meditation in motion, centered on Gayatri japa and Panchayatana puja. His profound impact on India's cultural soul is reflected in the works of numerous Sahitya Akademi award-winning poets who celebrated his radiant presence.

On March 18, 2018, during the sacred occasion of Chaitra Navaratri, Acharya Dinesh Chandra Joshi withdrew from the mortal plane in a state of serene fulfillment. His transition into Mahasamadhi was a conscious homecoming—a final dissolution of the jiva into Brahman, where all speech resolved into eternal silence.

The Department of Posts is pleased to release a Commemorative Postage Stamp on Acharya Dinesh Chandra Joshi.

Credits:

Stamp/FDC/Brochure/ Cancellation Cachet	:	Shri Brahm Prakash
Text	:	Based on the content provided by the Ministry of Culture

भारतीय डाक
डाक सेवा-जन सेवा
India Post
Dak Sewa-Jan Sewa

डाक विभाग
Department of Posts

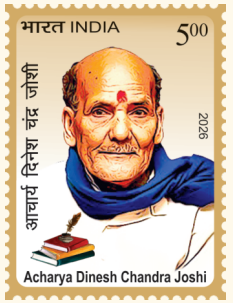

आचार्य दिनेश चंद्र जोशी
Acharya Dinesh Chandra Joshi

विवरणिका BROCHURE

आचार्य दिनेश चंद्र जोशी

11 अप्रैल, 1926 को उत्तराखंड के नैनीताल जिले के मटेला गांव में जन्मे आचार्य दिनेश चंद्र जोशी संस्कृत के प्रकांड विद्वान और प्रबुद्ध आध्यात्मिक गुरु थे। ब्राह्मण परिवार में पले–बढ़े, आचार्य दिनेश प्रख्यात वैदिक विद्वान आचार्य प्रेमबल्लभ जोशी और श्रीमती रेवती जोशी के पुत्र थे। उनकी प्रारंभिक शिक्षा उनके पिताजी और दादाजी के मार्गदर्शन में उनके घर के आध्यात्मिक वातावरण में हुई। आजीवन तपस्या के माध्यम से उन्होंने भारत में शिक्षा के अग्रणी केंद्रों, पवित्र सप्त पुरियों में अध्ययन करते हुए, शुक्ल यजुर्वेद और अद्वैत वेदांत में महारत हासिल की।

आचार्य जी ने संस्कृत को पुरातन भाषा के रूप में नहीं, बल्कि भारत की सभ्यतागत चेतना (चिति) को नैतिक शासन पद्धति (नीति) से जोड़ने वाले दैदीप्यमान सेतु के रूप में देखा। उन्होंने दशकों तक भारत और नेपाल में नंगे पांव घूम–घूम कर 'आदि शंकराचार्य' की शिक्षाओं का प्रचार–प्रसार किया। धार्मिक उपदेश देने के साथ–साथ वे पर्यावरण संरक्षण, पहाड़ों की पवित्रता और संस्कृत भाषा की गरिमा के संरक्षण के लिए भी प्रयासरत रहे। उनके इन अथक प्रयासों के परिणाम स्वरूप वर्ष 2010 में संस्कृत को उत्तराखंड की द्वितीय राजभाषा घोषित किया गया। यह वास्तव में संस्कृत भाषा के संरक्षण के क्षेत्र में एक ऐतिहासिक मील का पत्थर है।

1990 के दशक में, आचार्य जी ने मटेला में भगवती मंदिर और ध्यान केंद्र की स्थापना की, जो आज भी साधकों के बीच एक जीवंत तीर्थ स्थल के रूप में ख्यात है। इसके अलावा, उन्होंने वर्ष 2010 में संस्कृत दिवस पर, ऋग्वेद में उल्लिखित निदेशों के अनुरूप स्वस्तिवाचनम् की स्थापना की। इस पहल ने उनके पंच–आयामी विजन, अर्थात – संस्कृत पत्रकारिता, आयुर्वेद, योग, वास्तु शास्त्र और भारतीय अध्ययन (इंडोलॉजी) को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इन्हें उन्होंने समाज को पूर्णता प्रदान करने वाले और उसे जागृत करने वाले पंच महाप्रस्थान, अथवा पांच पवित्र तीर्थ बताया।

आचार्य दिनेश चंद्र जोशी को लोग प्रेम से ''आचार्य जी'' या ''पंडित जी'' कहते थे। वह विद्या (ज्ञान) और सेवा (सेवाभाव) के बीच एक जीवंत सेतु थे। वे दैनिक जीवन में सक्रिय रहकर भी गायत्री जप और पंचायतन पूजा के माध्यम से ध्यान अवस्था में रहा करते थे। भारत की सांस्कृतिक आत्मा पर उनका गहन प्रभाव विभिन्न 'साहित्य अकादमी पुरस्कार' विजेता कवियों की कृतियों के माध्यम से परिलक्षित होता है। इन कवियों की रचनाओं में आचार्य जी की शिक्षा के अंश झलकते हैं।

18 मार्च, 2018 को चैत्र नवरात्रि के पावन अवसर पर आचार्य दिनेश चंद्र जोशी अपनी उज्ज्वल सांसारिक यात्रा पूरी कर इस नश्वर संसार से दूर अनंत में विलीन हो गए। महासमाधि में उनका गमन इस प्रकार रहा मानों कोई सचेत प्राणी अपने घर लौटा हो – जीव के ब्रह्म में इस अंतिम विलय ने समस्त मुखरता को मानो शाश्वत मौन में परिवर्तित कर दिया।

डाक विभाग, आचार्य दिनेश चंद्र जोशी पर स्मारक डाक–टिकट जारी करते हुए प्रसन्नता का अनुभव करता है।

आभार:

डाक–टिकट/प्रथम दिवस आवरण/विवरणिका/विरूपण कैशे : श्री ब्रह्म प्रकाश

पाठ : संस्कृति मंत्रालय द्वारा प्रदत्त सामग्री पर आधारित

तकनीकी आंकड़े

TECHNICAL DATA

मूल्य Denomination	: 500पैसे : 500p
मुद्रित डाक टिकटें Stamps Printed	: 202800 : 202800
मुद्रण प्रक्रिया Printing Process	: वेट ऑफसेट : Wet Offset
मुद्रक Printer	: प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद : Security Printing Press, Hyderabad

The philatelic items are available for sale at Philately Bureaus across India and online at http://www.epostoffice.gov.in/PHILATELY_3D.html

©डाक विभाग, भारत सरकार। डाक टिकट, प्रथम दिवस आवरण तथा सूचना विवरणिका के संबंध में सर्वाधिकार विभाग के पास है।

©Department of Posts, Government of India. All rights with respect to the Stamp, First Day Cover and Information Brochure rest with the Department.

मूल्य ₹ 15.00